Gandhian Philosophy

M.A.-2nd Semester
Phil CC-07
Date-20/04/2020

Power Point Presentation by
Amrita Singh
Assistant Professor
Department of Philosophy
Purnea College, Purnea

Unit -2(2) Ends and means

Lecture-2. साध्य और साधन

- गांधी जी ने साधन की पवित्रता पर विशेष बल दिया है। क्योंकि उनका विचार था कि मनुष्य केवल साधन पर ही नियंत्रण रख सकता है वह भी सीमित रूप में।साध्य जब तक प्राप्त नहीं कर लिया जाता अप्राप्य ही रहता है।
- गीता में भी यही शिक्षा दी गई हैकि हमें कोई कार्य फल प्राप्ति के लिए नहीं करना चाहिए। निष्काम भाव से कर्म का संपादन करना ही गीता की शिक्षा का सार है।

- गांधी जी के अनुसार जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक है और इस लक्ष्य की प्राप्ति ऐसे साधन से संभव नहीं है जो आध्यात्मिकता के अनुरूप न हो ।
- साधन के स्वरूप का विवरण देते हुए गांधी जी कहते हैं कि साधन विशेष रूप से क्रिया सूचक पद है जिससे साध्य को प्राप्त किया जाता है, लेकिन सभी क्रियाएं एक समान नहीं होती । जैसे कुछ क्रियाओं में बल,प्रतिरोध,हत्या, शोषण आदि का समावेश होता है और कुछ क्रियाओं में प्रेम,करुणा, दया का।ये दोनों ही क्रियाएं कार्य सिद्धि में सहायक हैं, परन्तु गांधी जी अहिंसक क्रियाओं द्वारा लक्ष्य प्राप्ति का समर्थन करते हैं।

- अपने तर्क को गांधी जी एक घड़ी के उदाहरण से स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।वे कहते हैं कि माना किसी के पास कोई घड़ी है जिसे मैं पाना चाहता हूं।इसके लिए एक साधन हो सकता है कि मैं उसे बलपूर्वक छीन लूं,दूसरा साधन हो सकता है कि मैं उसे चुपचाप चुरा लूं,तीसरा तरीका हो सकता है मैं उसे खरीद लूं या चौथा ढंग हो सकता है कि मैं उसे दान या उपहार के रूप में प्राप्त कर लूं। यहां लक्ष्य एक ही है - घड़ी को पाना, किंतु चार प्रकार के साधन संभव हैं जिसके फलस्वरूप इनसे निर्धारित क्रिया का स्वरूप चार प्रकार का हो जाएगा- पहले ढंग से यह 'डकैती 'है,दूसरे ढंग से 'चोरी',तीसरे ढंग

से 'सौदा' तथा चौथे ढंग से दान या उपहार कही जाएगी।

- इस प्रकार हम देखते हैं कि साधन के विकृत होने से कार्य दूषित हो जाता है, लक्ष्य प्राप्ति का 'शुभत्व' समाप्त हो जाता है।
- कोई साध्य मूल्यवान है या नहीं इसका निर्धारण साधन से ही होता है क्योंकि किसी वस्तु को प्राप्त कर लेने से वह मूल्यवान नहीं होती बल्कि वह मूल्यवान तभी होती है जब वह प्राप्त करने योग्य हो।
- साधन के महत्व को समझाते हुए गांधी जी कहते हैं कि पवित्र साधन को अपनाकर भी ऐसा हो सकता

है कि हम अपने साध्य तक न पहुंचे किंतु वह साधन अपने में ही पूर्ण अर्थात् सफल है।

- गांधी जी के अनुसार 'सत्य' ही जीवन का चरम आदर्श है,यह ऐसा लक्ष्य है जिससे हमारे जीवन के हर कार्य का संचालन होना चाहिए।इस लक्ष्य की प्राप्ति का साधन 'अहिंसा' है। अतः 'सत्य' साध्य है और 'अहिंसा' साधन है।
- यही कारण है कि 'स्वराज्य' रूपी साध्य की प्राप्ति का साधन अहिंसक सत्याग्रह ही हो सकता है।
- इस प्रकार गांधी जी का स्पष्ट मत है कि यदि अंततः सत्य की प्राप्ति करनी है तो उसकी प्राप्ति का साधन पूर्णतया शुद्ध होना चाहिए ।

Thank You